DOMS Page No. Date / /

1

Q. विद्यार्थी पाठ्यचर्या में समकालीन बदलाव तथा बिहार में शिक्षा के समकालीन समझ :

आजकल प्रचलित आर्थिक विकास के लगभग सभी प्रमुख मापदण्डों के आधार पर बिहार को पिछड़ा राज्य माना जाता है लेकिन इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि वृद्धि और विकास की यहाँ अधिक संभावना मौजूद है। राज्य में अनेक समाज विज्ञानियों के लिए इसकी व्याख्या करना आसान नहीं होगा कि देश के अर्थतंत्र और बेहतरी के लिए बिहार कितने अप्रत्यक्ष तरीकों से योगदान कर रहा है, अतः शिक्षा इस स्थिति को ठीक करने का सबसे तर्कसंगत उपाय साबित हो सकती है।

बिहार में शिक्षा के समकालीन संदर्भ

बिहार में शिक्षा के समकालीन संदर्भ को निम्नलिखित तरीके से उपयोगी करने के लिए श्रृंखलाबद्ध किया जा सकता है।

1. बिहार में अभी भी सामाजिक सोच पर जाति आधारित श्रेणीक्रम की गहरी पकड़ है जो जीवन और समाज के तमाम पहलुओं को प्रभावित करता है तथा समानता और स्वतंत्रता के मूल्य के ~~आम~~ आड़े आता है

2. ऐसी समाज व्यवस्था में शैक्षिक संस्थाओं का भी श्रेणीक्रम उभरा है, जो विद्यमान असमानताओं को जारी रखने में ही सहायक है।

3. विरोध, व्यवस्था और अवज्ञा अपने-आप में मूल्य से बन चुके है तथा व्यवस्थित और संतुलित सामाजिक रूपांतरण की राह में अवरोध पैदा कर रहे हैं।

4. देश में वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकीय परिवर्तन के युग में प्रवेश कर रहा है और प्रारंभिक शिक्षा से माँग की ओर बढ़ते हुए सम्पूर्ण मौलिक अधिकार के रूप में विकसित हो गई है।

उपयुक्त स्थिति उथल-पुथल भरे समाज की द्योतक है जहाँ सामाजिक हस्तक्षेप अत्यावश्यक है और इसीलिए राज्य की के लिए पाठ्यचर्या बनाते समय इन कारकों को नजर में रखना जरूरी है, राज्य में सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संसाधन आवश्यकता अनुसार उपलब्ध है जिनका इस्तेमाल हम मौजूदा हालात से निकलने के लिए किया जा सकता है।

उत्तर बिहार के पूर्वी हिस्से में जहाँ अति समृद्ध मिथिला संस्कृति विद्यमान है, वहाँ पश्चिम की तरफ भोजपुरी भाषी क्षेत्र का बड़ा भाग है जो राज्य के बाहर तक फैला हुआ है। मगध की अपनी भाषा और संस्कृति है। हर तरफ अपनी कला एवं संस्कृतियों का कोष अपना समृद्ध भंडार है। बिहार में पाठ्यक्रम का निर्माण और संशोधन तो समय-समय पर होता रहा है लेकिन अतीत में अपनी खुद की पाठ्यचर्या बनाने पर कभी भी

गंभीरतापूर्वक विचार नहीं किया गया।
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2000
को लेकर उठे विवादों और
उसके बाद राष्ट्रीय पाठ्यचर्या
रूपरेखा 2005 के बारे में
व्यापक विचार-विमर्श के बाद
अब बिहार में अपनी खुद
की पाठ्यचर्या बनाने की
जरूरत महसूस हुई है।